राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

राजभवन में भूगोल एवं गणित विषयों के नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों की कार्यशाला आयोजित हुई

पटना, 25 अक्टूबर 2018

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री लाल जी टंडन के निदेशानुरूप आज राजभवन सभागार में भूगोल एवं गणित विभाग के नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों की एक कार्यशाला आयोजित हुई; जिसमें उनसे इन विषयों की शिक्षण–विधि के विकास के संदर्भ में आवश्यक सुझाव प्राप्त किए गये। ज्ञातव्य है कि विश्वविद्यालयों में नवाचारी प्रयोगों को कार्यान्वित करने के क्रम में, देश के विभिन्न प्रतिष्ठित विद्यालयों से शिक्षा ग्रहण कर आये इन नवनियुक्त प्राध्यापकों से राज्य में विश्वविद्यालयीय/महाविद्यालयीय शिक्षा के विकास के संदर्भ में सुझाव देने को कहा गया था। राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि के तौर पर आज भूगोल एवं गणित विषय के सहायक प्राध्यापकों ने राजभवन पहुँचकर प्रधान सचिव को अपने विचारों से अवगत कराया।

प्राध्यापकों को संबोधित करते हुए प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने कहा कि नवनियुक्त सभी शिक्षकों पर अपने कैरियर के समुचित विकास के साथ–साथ, अपने अध्यापन–संस्थान की प्रतिष्ठा बढ़ाने की भी जिम्मेवारी है। उन्होंने कहा कि नवनियुक्त सभी शिक्षक प्रतिभावान हैं, जिन्हें राज्य में उच्च शिक्षा के सुधार–प्रयासों को गति प्रदान करने में भरपूर सहयोग करना चाहिए।

आज आयोजित कार्यशाला में भूगोल विषय के प्राध्यापकों ने सुझाया कि भूगोल विभाग में 'जी॰आई॰एस॰ लैब' तथा 'रिमोट सेंसिंग' की सुविधाएँ उपलब्ध कराना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि भूगोल विभाग की प्रयोगशालाओं में उपकरणों, संयंत्रों एवं लैब–कर्मियों की काफी कमी है, जिसे शीघ्र दूर किया जाना चाहिए। शिक्षकों ने भूगोल के पाठ्यक्रम को प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुकूल तथा रोजगारोन्मुखी बनाये जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने सुझाया कि हरेक विषय में स्नातकोत्तर का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो 'नेट' परीक्षा की तैयारी में सहायक हो। उन्होंने कहा कि नियमित कक्षाओं में ही ऐसा शिक्षण होना चाहिए कि 'नेट' परीक्षा की तैयारी भी स्वतः साथ–साथ चलती रहे।

भूगोल के प्राध्यापकों ने कहा कि भूगोल विभाग में भी अन्य विषयों की भाँति 'अध्ययन परिभ्रमण' (Study-Tour) के कार्यक्रम निर्धारित होने चाहिए।

प्राध्यापकों ने कार्यशाला में सुझाया कि सरकारी विभागों विशेषकर ग्रामीण विकास, नगर विकास तथा वन एवं पर्यावरण विभाग आदि की योजनाओं के निर्माण एवं सूत्रण में विश्वविद्यालयीय प्राध्यापकों के शोध एवं विचारों के साथ भी समन्वय बनाने हेतु कोई सार्थक व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। भूगोल के प्राध्यापकों ने कहा कि जल संसाधन विभाग तथा आपदा–प्रबंधन विभाग के कार्यक्रमों की रूपरेखा निर्धारित करने में भूगोल–शिक्षकों के ज्ञानानुभवों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

आगे पृष्ठ....2 पर

प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालयों में शिक्षक–छात्र संबंधों को भी बेहतर बनाये जाने तथा 'शिक्षक –अभिभावक–बैठकें' आयोजित कराने का भी सुझाव दिया। प्राध्यापकों ने शिक्षकों के साथ–साथ छात्रों की भी 'बायोमेट्रिक उपस्थिति' दर्ज कराने का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि वे अपने अध्यापन के जरिये कक्षाओं में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। शिक्षकों ने सूदूरवर्त्ती डिग्री महाविद्यालयों में भी पी॰जी॰ की पढ़ाई शुरू कराने का सुझाव दिया, ताकि छात्रों को अपने घर के नजदीक ही उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध हो जाये।

गणित के प्राध्यापकों ने पुस्तकालयों में नयी किताबों की खरीददारी तथा 'Smart Classes' शुरू कराने का अनुरोध किया।

कार्यशाला में प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, अपर सचिव श्री विजय कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी (वि॰वि॰) श्री अहमद महमूद आदि भी उपस्थित थे।

.....